ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यद्यद्यामि तदा भर। अथर्ववेद-20/118/2

हे प्रभो! जो जो मैं मांगू वह वह मुझे प्रदान कर।

O God ! bestow on me whatever I seek.

वर्ष 38, अंक 20 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 मार्च, 2015 से रविवार 05 अप्रैल, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

92 वें जन्मदिवस पर महाशय धर्मपाल व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व समारोह उत्साहपूर्वक संपन्न

मुझे आर्य समाज का और अधिक कार्य करने के लिए दें आशीर्वाद : महाशय धर्मपाल

संन्यासी महानुभावों से चरण छूकर लिया आशीर्वाद | हजारों की संख्या में आर्यजनों, पारिवारिक मित्रों एवं बच्चों ने दी शुभकामनाएं

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में जहां पर्वों की विशेष महत्ता है। वहीं पर जन्मदिवस को उत्सव के रूप में मनाने की भी एक प्राचीन परम्परा है। आर्य प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों के मध्य प्रातः 9:10 बजे आचार्य आनन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रान्तों की सभाओं के पदाधिकारियों ने भी महाशय जी के लम्बे जीवन की कामना की। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान एवं राजस्थान से श्री सोमरत्न आर्य जी, श्री गोपाल बाहेती जी एवं श्री प्रदीप आर्य जी, छत्तीसगढ़ सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा

यज्ञ करते महाशय धर्मपाल जी एवं राजीव गुलाटी जी सपत्नीक, दीप प्रज्वलित करके समारोह का शुभारंभ करते महाशय जी, महाशय धर्मपाल जी को शुभकामनाएं देते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेंद्र आर्य एवं श्री राजीव गुलाटी।

सार्वदेशिक सभा की ओर से शुभकामनाएं देते उप-प्रधान श्री सुरेश चंद्र अग्रवाल जी, समारोह में पधारे आर्य जनों, अतिथियों, संन्यासियों, विद्वत् मंडल का अभिवादन करते महाशय धर्मपाल जी एवं एमडीएच परिवार, विद्यालयी बच्चों की प्रस्तुति को ध्यान मग्न देखते महाशय धर्मपाल जी एवं एम.डी.एच. परिवार के सदस्यगण।

जगत् के दानवीर, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, वेद के प्रचार के लिए अहर्निश प्रयत्न करने वाले महाशय धर्मपाल जी ने एक विशाल समारोह में अपना 92 वां जन्मोत्सव भारत वर्ष के मूर्धन्य आर्य संन्यासियों के आशीर्वाद से तथा आर्य नेताओं, विद्वानों एवं गणमान्य व्यक्तियों के मध्य हर्षोल्लास एवं उत्साह पूर्वक मनाया। दिल्ली एवं देश के विभिन्न यज्ञ के पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री राजीव आर्य जी एवं दोनों सभाओं के सभी उपस्थित पदाधिकारियों ने महाशय जी का माल्यार्पण कर अभिवादन किया और सौ वर्षों से अधिक जीने एवं स्वस्थ रहने की कामना की। इस अवसर पर भारत के दूसरे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सुरेश चंद्र अग्रवाल जी, मध्यभारत सभा के मंत्री एवं सार्वदेशिक सभा दिल्ली के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, जम्मू कश्मीर सभा के प्रधान श्री भारत भूषण आर्य जी, झारखण्ड सभा के प्रधान श्री भारत भूषण आर्य (त्रिपाठी) जी, महाराष्ट्र सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि जी, उपप्रधान श्री दयाराम बसैये जी, जी, उत्तर प्रदेश सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, बिहार सभा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी एवं मंत्री श्री रमेन्द्र गुप्ता जी, कर्नाटक सभा से श्री डॉ. राधा कृष्ण वर्मा जी, उड़ीसा सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, विदर्भ सभा के प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री जी, एवं कोषाध्यक्ष श्री यशपाल 'ज्ञानवाणी' जी, हरियाणा

...शेष पृष्ठ 4 पर

शहीद-दिवस के अवसर पर 'जरा याद करों कुर्बानी...'

अन्धविश्वास एवं पाखण्ड उन्मूलन कार्यक्रम उत्साहपूर्वक संपन्न

'क्या ये पाखंड हमें फिर से गुलाम बनाएगा?' इस विषय पर अमर शहीद राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह के शहादत दिवस की पूर्व सन्ध्या 22 मार्च 2015 को पहली बार आर्य समाज प्रीतविहार एवं आर्यसमाज मण्डावली के आर्यों ने मन्दिर परिसर से बाहर निकलकर तालाब चौक पार्क मण्डावली में जोश भर दिया। ठीक 4:00 बजे युवा विद्वान् पं. यशपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ आरंभ हुआ। इसमें मुख्य यजमान श्री रामनिवास गुप्ता जी (पूर्व प्राचार्य) श्री रमेश गुप्ता जी, श्रीमती सरला गुप्ता जी, श्रीमती मधु सिंह जी श्री रविचन्द्र सेठ श्रीमती कौशल्या सेठ, श्री ऋषिराज वर्मा जी आदि ने विशेष यज्ञ किया। ...शेष पृष्ठ 4 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मुझे पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति का अध्यक्ष बनाया गया तो तभी से सभी आर्यजनों के साथ मिलकर यह योजना बनाई थी कि इस वर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस से लेकर पूरे वर्ष पाखंड और अन्धविश्वास की समाप्ति के लिए विशेष अभियान चलाएँगें। इसी कड़ी में अमर शहीद राजगुरु, सुखदेव एवं भगत सिंह के बलिदान दिवस पर एक विशेष पुस्तक 'यह पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा' का प्रकाशन कर 10,000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटी जा रही हैं। आप भी यदि अपनी ओर से अथवा आर्य समाज की ओर से यह पुस्तक बंटवाना चाहें तो आपके नाम के साथ मात्र लागत मूल्य 3 रुपये की दर से आपको उपलब्ध करा दी जाएगी। सज्जनो! 21 सितंबर 1995 को षड्यन्त्र रचकर, मीडिया का सहारा लेकर इन पाखंड ताकतों ने "गणेश की मूर्ति दूध पी रही" इस अंधविश्वास को फैलाकर यह सफल प्रयोग कर लिया है कि इस देश में अभी भी आत्मिक बल कमजोर है तथा इसके निवासियों को कभी भी बहकाया जा सकता है।

-सुरेन्द्र कुमार रैली, अध्यक्ष, पाखंड और अन्धविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वेद स्वाध्याय

हमारे अंत: करण में सोम सरोवर बहने लगे

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः।
सुमृळीको न आ विश।। ऋ. 1/91/11

ऋषिः - **राहूगणपुत्रो गोतमः**।। देवता- **सोमः**।। छन्दः - **निचृद्गायत्री**।।

शब्दार्थ- सोम=हे सोमदेव! **वयं वचोविदः** = वाणी के वेत्ता हम लोग **त्वा** = तुझे **गीर्भिः** = अपनी वाणियों द्वारा **वर्धयामः** = बढ़ाते हैं। **सुमृळीकः**= उत्तम सुख देने वाले होते हुए तुम **नः आविश** = हम में प्रविष्ट हो जाओ।

विनय- हे प्रशान्तस्वरूप सोमदेव! तुम सब जगत् के सार हो, जीवन-रस हो, फिर भी प्रकृति के विषयों में फंसा हुआ मनुष्य-संसार तुम्हें नहीं जानता। तुम कुछ हो यह कभी अनुभव ही नहीं करता, परंतु हम लोग जिन्होंने तुम्हारी दया से तुम्हारी थोड़ी-बहुत अनुभूति का सुख पाया है, अपना यही कार्य समझते हैं कि पागलों की तरह सब जगह तुम्हारे गुण गाते फिरें-गाते फिरा करें। तुम्हारी भक्ति ने ही हमें "वचोविद्" भी बना दिया है-तुम्हारी भक्ति से हम वाणी की शक्ति को, रहस्य को जान गये हैं और इस शक्ति का प्रयोग करना भी जान गये हैं, अत: अपनी वाणियों से हम सदा तुम्हारा कीर्तन करते हैं, तुम्हारा यश गाते हैं, तुम्हारे स्वरूप का वर्णन करते हैं। जहां विषयग्रस्त मानवी हृदयों ने तुम्हें निकाल रखा है या जहां प्रकृतिवाद ने तुम्हारे लिए जगह नहीं रखी है, वहां भी तुम्हारा नाम फैलाते हैं, तुम्हें पहुंचाते हैं। मानो तुम्हारे सैनिक बनकर सांसारिक दृष्टि से तुम्हारा राज्य बढ़ाने का यत्न करते हैं, परंतु हे देव! तुम इतना करो कि सात्त्विक सुख के दाता होते हुए सदा हमारे अंदर प्रविष्ट रहो, बस हम यही चाहते हैं। हम तुच्छ लोग तुझे कहां से बढ़ा सकते हैं! हम तुझे फैलाते हैं, तुम्हारा राज्य फैलाते हैं-यह कहना कितनी धृष्टता का वचन है।

हे सर्वशक्तिमन्! हे अनंत, अपार! वास्तव में तुम्ही जितना हमारे अंदर प्रविष्ट होते हो उतना ही हममें तुम्हारा अवर्णनीय सात्त्विक सुख अनुभूत होता है और उस आनंद में मस्त होकर हम तुम्हारे गुण गाते फिरते हैं। तब हमारे एक-एक अंग से, हमारी एक-एक चेष्टा से, तुम्हारा प्रकाश होता है, अत: हमारी प्रार्थना तो यही है कि तुम हमारे अंदर प्रविष्ट हो जाओ, तुम हम में आविष्ट हो जाओ। जितनी मात्रा में तुम हम में प्रविष्ट होओगे, उतनी ही मात्रा में हमारे द्वारा जगत् में तुम्हारा प्रचार व प्रकाश होगा। हे प्रभो! इस सात्त्विक सुख से हमें अनुप्राणित करते हुए हम में आविष्ट हो जाओ। **- आचार्य अभय देव**

ग्रंथ परिचय

गोतम-अहल्या और इंद्र-वृत्रासुर की सत्यकथा

गोत्तम अहल्या और इंद्र वृत्रासुर आदि कथाओं के मूल ग्रंथ ब्राह्मण ग्रंथ हैं जिनमें ऋषियों ने वेद के रहस्य को जन साधारण के हित ग्राह्य बनाने के लिए सुंदर आलंकारिक रूप में प्रस्तुत किया है। परंतु कालांतर में वेदार्थ के सत्यार्थ का लोप होने के कारण इन कथाओं को विकृत किया गया जिससे ये कथाएं अंधविश्वास और पाखंड का पर्याय बन गई। महर्षि दयानंद सरस्वती ने अंधविश्वास और पाखंड रूपी भ्रांतियों का निराकरण करते हुए वेद रहस्य और ऋषियों के मंतव्यों को सत्यार्थ के साथ प्रस्तुत करने के लिए इस लघु ग्रंथ की रचना की है, पाठकों की सेवा में इस ग्रंथ परिचय को प्रकाशित किया जा रहा है। **-संपादक**

प्रश्न 1. यह तो कोई पौराणिक ग्रंथ प्रतीत होता है?

उत्तर: हां, गोतम और अहल्या से संबंधित कथा का वर्णन पुराणों में भी मिलता है जो अत्यंत बीभत्स रूप में है। वास्तव में मूल रूप से यह कथा ब्राह्मण-ग्रंथों में मिलती है जो आलंकारिक रूप में है।

प्रश्न 2. ब्राह्मण ग्रंथों में यह कथा किस नाम से निर्दिष्ट है?

उत्तर: 'गोतम अहल्या और इंद्र वृत्रासुर' नाम से यह कथा आलंकारिक रूप में ब्राह्मण ग्रंथों में है।

प्रश्न 3. महर्षि ने गोतम, अहल्या आदि पुरुषवाची नामों को किस रूप में लिया है?

उत्तर: महर्षि ने वर्णन किया है कि ब्राह्मण ग्रंथों में गोतम चंद्रमा का, अहल्या रात्रि का, इंद्र सूर्य का तथा वृत्र मेघ (बादलों) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रश्न 4. क्या इस घटना को महर्षि ने स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में ही लिखा है?

उत्तर: वास्तव में ये दो घटनाएं हैं- गोतम और अहल्या की तथा इंद्र और वृत्रासुर की।

इन दोनों घटनाओं के वास्तविक स्वरूप का दर्शन महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'ग्रंथ प्रामाण्याप्रामाण्य प्रकरण' में एवं मार्गशीर्ष शुदी 15, संवत् 1933 को वेदभाष्य के विषय में छपवाये गये विज्ञापन में भी करवाया है। हो सकता है, इस विज्ञापन की ही स्वतंत्र पुस्तक मान लिया गया हो अथवा कोई स्वतंत्र पुस्तक भी हो, यह निश्चित नहीं हो पा रहा।

प्रश्न 6. इस पुस्तक का क्या कहीं उल्लेख मिलता है?

उत्तर: हां, इस पुस्तक का दो-तीन स्थानों पर उल्लेख मिलता है:-

1. संवत् 1937, चैत्र में प्रकाशित 'गोकरुणानिधि' के अंतिम पृष्ठ पर, दो पैसे मूल्य के साथ इसका सबसे पहले उल्लेख मिलता है।

2. संवत् 1937, आषाढ़ में यजुर्वेद भाष्य के 15वें अंक के अंत में छपे विज्ञापन में।

3. काशी शास्त्रार्थ (संवत् 1937) और सत्यधर्म विचार (सं. 1937), ग्रंथों में छपे पुस्तकों के विज्ञापन में भी इसका उल्लेख है। यहां इस पुस्तक का मूल्य एक आना लिखा हुआ है।

4. महर्षि के वि. संवत् 1939, भाद्रपद बदी 1, मंगलवार के दिन लिखे पत्र में इस पुस्तक की 25 प्रतियां प्राप्त करने का उल्लेख है।

साभार महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय

प्रेरक प्रसंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि

शास्त्रों में आत्मा को रथी और बुद्धि को सारथी कहा गया है। जब सारथी उत्तम होता है तो रथी को सुरक्षित एवं शीघ्र उसके गन्तव्य पर पहुंचाता है। यदि ऐसा नहीं होता तो प्रतिफल इसके विपरीत होता है। आयुर्वेद के ज्ञाता भगवान पुनर्वसु बुद्धि को ही शारीरिक-सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रोगों का कारण मानते हैं। क्योंकि बुद्धि में विकृति आने से ही खान-पान, रहन-सहन और आचार-विचारों में विकृति आती है। **-संपादक**

आयुर्वेद-शास्त्र के महान् ग्रन्थ 'चरक' को लिखनेवाले महर्षि पुनर्वसु अपने अद्वितीय ग्रन्थ को लिखने के पश्चात् एक जंगल में चले जा रहे थे। घने जंगल की पगडंडी पर आगे वे थे, पीछे उनका शिष्य अग्निवेश। एकाएक महर्षि पुनर्वसु खड़े हो गये । आगे की ओर देखा उन्होंने, चारों ओर देखा। एक लम्बी साँस लेकर बोले "महानाश आने वाला है।"

अग्निवेश ने पूछा- "कैसा महानाश, गुरुदेव ?"

पुनर्वसु बोले- "मैं देखता हूँ कि जल बिगड़ रहा है, पृथ्वी बिगड़ रही है, वायु, तारे आकाश, सूर्य और चन्द्र बिगड़ रहे हैं। अरे, अनाज अपनी शक्ति छोड़ देगा ओषधियां अपना प्रभाव छोड़ देंगी। पृथ्वी पर टूटते हुए तारे गिरेंगे। विनाश करने वाली आंधियां चलेंगी। विनाशकारी भूकम्प उठेंगे। बड़े-बड़े बम्ब गिरेंगे। महानाश का महाताण्डव जाग उठेगा। मनुष्य बचेगा नहीं बचेगा नहीं।" यह कथा 'चरक' के विमान-स्थान के तीसरे अध्याय में आती है। इसमें लिखा है कि अग्नि वेश ने जब यह भ्यानक भविष्यवाणी सुनी तो हाथ जोड़कर कहा- "गुरुदेव! आप यह भयभीत करने वाली भविष्य- गाथा क्यों कर रहे हैं ? सब रोग का सामना कर सकें, ऐसा ग्रंथ आपने लिख दिया। दुनिया के प्रत्येक रोग का इलाज लिख दिया। फिर भी यह विनाश आयेगा तो क्यों ?

महर्षि पुनर्वसु ने कहा -"इसलिए आयेगा कि लोग धर्म को छोड़कर अधर्म की ओर चल पड़ेंगे- सत्य को छोड़कर असत्य की ओर। सत्य और धर्म में रूचि नहीं रहेगी।"

अग्निवेश ने पूछा-"धर्म और सत्य की ओर मनुष्य की रुचि न रहने का क्या कारण होगा, गुरुदेव?"

गुरु बोले-" बुद्धि बिगड़ जाना ही इस महानाश का कारण होगा। जब बुद्धि बिगड़ जाती है, जब वह सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य की ओर बढ़ती है, तब धर्म में रुचि नहीं रहती।"

बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है, परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवल शारीरिक रोग पैदा नहीं होते, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और आत्मिक सभी रोग पैदा होते हैं। इसीलिए कहते हैं कि जब नाश का समय निकट आता है, जब बुद्धि उलटे मार्ग पर चलने लगती है। भगवान् कृष्ण ने भी गीता में कहा है-

बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।

बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है। **-साभार बोध कथाएं**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुदित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सामाजिकता की सूखती हुई बेल-एक ज्वलन्त समस्या

प्रकाश आर्य, मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

समाज के वर्तमान परिदृश्य का अवलोकन करते हुए श्री प्रकाश आर्य जी का यह लेख पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है जिसमें सामाजिक परिवेश में गिरते मानवीय मूल्यों का अन्वेषण किया गया है कि मानव अपने स्वार्थ की सिद्धि हेतु मित्र, सगे व संबंधियों की परवाह नहीं करता वह केवल धन, यश और संतति (पुत्र) की हर परिस्थिति में पूर्ति के लिए संलग्न रहता है और अपने मानवीय गुणों को भूल वास्तविक उद्देश्य प्रभु की प्राप्ति से भटकता जा रहा है। इसी दृष्टिकोण से कि मानव सर्व प्रथम मानव तो बने, इस उदेश्य को समझने और प्राप्ति के लिए ही प्रेरणादायक यह लेख प्रस्तुत है। -संपादक

इस शीर्षक को पढ़ने के पहले समाज से एक प्रश्न है - क्या हम सामाजिक हैं ? इसलिए पहले यह जानना आवश्यक है कि समाज का अर्थ क्या है ? चौंकिए मत, जरा इस पर गंभीरता से विचार करें और फिर निर्णय करें। किसी वस्तु, व्यक्ति, जाति के संबंध में उसके प्रति निर्मित धारणा, संख्या की बहुतायत के आधार पर प्राप्त की जाती है। जैसे किसी टोकरी में बहुत से आम रखे हैं, उनमें से अधिकांश खट्टे हैं और कुछ मीठे भी हैं। मान लीजिए, खट्टे आमों का प्रतिशत 90 है और अच्छे मीठे आमों का प्रतिशत 10 है या और भी कम है तो ऐसी स्थिति में आम की टोकरी के बारे में जब कोई पूछे तो अपनी धारणा के अनुसार टोकरी में आम खट्टे हैं, बतायेगा। ठीक इसी प्रकार समाज के बारे में मूल्यांकन उसके अधिकांश व्यक्तियों की वर्तमान स्थिति को देखकर ही किया जाना चाहिए। अपवाद तो सभी जगह पाए जाते हैं, इस भीड़ में निश्चित ही कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनके जीवन में सामाजिक गुणवत्ता के महत्वपूर्ण तथ्य पाए जाते हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी जो महामना समाज की गरिमा बनाए हुए हैं वास्तव में धन्य हैं, स्तुत्य हैं।

किन्तु आज विकृति से घिरे समाज का अधिकांश तबका जिस विचारधारा में लिप्त है यही समाज के मूल्यांकन की प्रामाणिकता का आधार मानना होगा।

शीर्षक को ठीक से समझने के लिए उसे दो प्रकार से समझना होगा। पहला सामाजिक कौन और दूसरा असामाजिक कौन ?

सामाजिक कौन है? इसे जानने के लिए समाज के प्रमुख लक्षणों को समझना होगा, वे कौन से कारण हैं, गुण हैं, आदर्श हैं? जिनसे समाज का महत्त्व है। पहले इसी पर थोड़ा चिन्तन करते हैं।

विचार करने के पूर्व हमारे लिए यह भी जानना आवश्यक है कि समाज है क्या? उत्तर साधारण सा है, मनुष्यों के समूह को समाज माना जाता हैं जिसमें सभ्यता, संस्कार, सहयोग, संगठन हो, जो जीवन लक्ष्य से पूर्ण हो।

इस उत्तर में मनुष्य शब्द का प्रयोग किया है, जैसे माला का नाम मस्तिष्क में आते ही हमारी कल्पना में फूलों की या मोतियों का स्वरूप सामने आता है। जहां बहुत से फूल या मोती माला में पिरोए जाते हैं, वह माला कहलाती है। समाज की परिभाषा में भी मानव समूह को समाज कहते हैं। समूह तो हो परन्तु मनुष्यों का हो। पशु-पक्षी भी काफी संख्या में एक साथ देखे जाते हैं किन्तु उन्हें समाज की उपमा नहीं दी जाती है। मानवीय गुण विशेष के कारण मनुष्यों के समूह को ही समाज कहा जाता है, और यह ठीक भी है। गाय आदि पशुओं के झुण्ड को समज कहा जाता है। समज और समाज में यह अन्तर समझने योग्य है।

अब सोचना होगा समाज का सदस्य मनुष्य कौन और कैसा हो ?

क्या भौतिक रूप से दो हाथ, दो पैर, दो कान, दो आँखें और जो सीधा होकर चले, उसे ही मनुष्य कहा जाना ठीक है ? यदि मनुष्य की यही परिभाषा माने तो फिर समाज को सतत क्षति पहुंचाने वाले, निर्मम हत्या करने वाले, चोर-डाकू, आतंकवादी, नक्सली, इन सबको भी मनुष्य ही कहना चाहिए। किन्तु सत्य तो यह है कि मानवता विहीन संख्या समाज कहलाने योग्य नहीं है। ऐसे व्यक्ति समाज के सदस्य कहलाने के अधिकारी भी नहीं हैं, जो दानवता का कार्य करते हुए, मानवता का चोला पहने हैं। ऐसी गलत वृत्तियों में संलग्न व्यक्तियों को मनुष्य कहना कोई भी ठीक नहीं समझता। बोलचाल की भाषा में जब कोई व्यक्ति किसी समाज विरोधी निन्दनीय कार्य में पाया जाता है तो यह कहते सुना जाता है, अरे, वह क्या आदमी है? वह मनुष्य है क्या ? कोई आदमी ऐसा कार्य करता है क्या? अर्थात् इस मानवीय चोले को ही मनुष्यता से जानना उचित नहीं है। एक उर्दू के शायर ने बहुत अच्छा लिखा है-

छिपे हैं जाने कितने जंगल बस्तियों के बीच। आदमी तो आज शैतान के रूप में मिला है।।

जैसे कोई भवन है खाली है, जीवन प्रदान करने वाली सामग्री, अनाज, औषधि आदि और उसमें समाज को नष्ट करने वाली, नशीली सामग्री विध्वंशक वस्तुएं गोला-बारूद, शस्त्र, आर. डी. एक्स. कुछ भी रख सकते हैं। भवन तो दिया था परन्तु जिस प्रकार की सामग्री उसमें रखी, उसी से उसकी पहचान उसी अनुसार होगी। जो भवन समाज का रक्षक हो सकता है, वही भवन समाज का भक्षक भी हो सकता है। ठीक यही स्थिति इस मानव समाज की है, इसे जैसा बनाया जावेगा, उसी अनुसार इसकी पहचान होगी। इस मानव चोले में मानव-देवता-दानव कोई भी पाए जा सकते हैं। चोला तो साधन है, इसका स्वामी आत्मा है, स्वामी जैसे चाहे इस चोले का उपयोग कर सकता है। इस चोले की स्थिति का निर्धारण हमारी तामसी-राजसी-सात्विक प्रवृत्तियां करती है।

इसलिए वास्तव में सही अर्थों में जो मनुष्य है और वे जहां एकत्रित हैं उसे ही समाज कहना चाहिए। एक और महत्त्वपूर्ण बात है। मनुष्य बनना पड़ता है, जन्म से मनुष्य पैदा हो गया यह विचार भ्रम है।

संसार का सर्वप्रथम ज्ञान, सर्वप्रथम संस्कृति और ईश्वरीय ज्ञान वेद है। वेद की महत्ता को सनातन धर्म के अनेक ग्रंथों ने और दुनिया के हजारों चिन्तकों ने, दार्शनिकों ने, जो विभिन्न जाति, सम्प्रदाय, देशों के हैं, उन्होंने वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है, क्योंकि वह ईश्वरीय ज्ञान है। वेद जैसा प्रमाण हमें उपलब्ध है तो उसी का उदाहरण देना अधिक महत्त्वपूर्ण होगा।

वेद के एक मन्त्र में कहा -

तुन्तुं तन्वनजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धिया कृतान्। अनुल्वणं वयत जोगुमुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम्।। - ऋ 10/53/6

यह उपदेश मानव के लिए किया गया। संसार के ताने-बाने को बुनते हुए। अपने जीवन को सूर्य का गामी अर्थात् सूर्य का अनुसरण करने वाला बनावें। ऐसा करके हम स्वयं मनुष्य बनें और दूसरों को भी मनुष्य बनावें।

ऊपर वेद मन्त्र में कहा जीवन की अपनी समस्याओं को, जवाबदारियों को, इच्छाओं को पूरा करते हुए भी सूर्य का अनुसरण करें। सूर्य का अनुसरण करने का भाव यहां सूर्य के गुणों से है, सूर्य अन्धेरे का नाश कर सर्वत्र प्रकाश फैलाता है, सूर्य ऊर्जा प्रदान करता है, प्रातः उगते समय और ढलते समय एक जैसा वरूण रंग होता है, गन्दगी को नष्ट करता है, पानी बादलों का निर्माण करता है, अपनी किरणों से समुद्र के सारे पानी का वाष्पीकरण कर बादलों तक पहुंचाता है, जिससे अमुतरूपी बारिश के रूप में संसार के लिए पुनः प्राप्त हो जाता है। यह गुण मनुष्य के लिए वेद भगवान ने बनाए क्रमशः इसका तात्पर्य है हम अज्ञानरूपी अन्धेरे का नाश कर ज्ञानरूपी प्रकाश फैलावें। सूर्य के समान हमारा जीवन दूसरों को भी ऊर्जा प्रदान करे, जिस प्रकार अपनी किरणों से पदार्थों की गन्दगी, दुर्गन्ध सूर्य दूर कर देता है वैसा ही हमारा जीवन हो, हम भी अपनी आन्तरिक व बाहरी स्वच्छता बनाएं रखें। हम भी जहां कमजोरी दिखे, उसे दूर करें, खारे पानी को लेकर अमृत तुल्य जल जैसे सूर्य हमें दिलवाता है वैसे ही हम कटुता के व्यवहार को मधुरता में परिवर्तित कर दें, जैसे सूर्य प्रातः उगते और सायं ढलते दोनों समय वरूण रंग का होता है, वैसे ही हम जीवन में अति सुख व अति दुःख दोनों अवस्थाओं में एक जैसे गंभीर बने रहें।

मन्त्र का आगामी सन्देश हैं मन्त्र कहता है - ''मनुर्भव जनया दैव्यम जनम्''।

अर्थात् - ऐ दुनियां के लोगों तुम स्वयं मनुष्य बनो और जब स्वयं मनुष्य बन जावो तो अपने समान दूसरों को भी मनुष्य बनावो।

उपरोक्त विचारों को आत्मसात करने के उपरान्त मनुष्य का जीवन एक सामाजिक व आदर्श जीवन बन सकता है। ऐसा व्यक्ति ही अपने साथ-साथ वह परमार्थ की भावना का भी संयोजन करेगा, अपनी प्रगति के साथ दूसरों की भी प्रगति का विचार करेगा।

ये है एक सामाजिक विचारधारा का सही चित्रण, यही समाज के प्रत्येक सदस्य का आदर्श है। समाज रूपी बेल का पोषण इसी प्रकार की मानवीय भावनाओं से संभव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत ही सुन्दर विचार इस व्यवस्था पर दिए हैं - ''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'' समाजवाद की, सामाजिक उन्नति की इससे अच्छी सरल परिभाषा कहीं पढ़ने-सुनने को नहीं मिली।

जब वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टि डालें, और चिन्तन कर सोचें कि, आज समाज की स्थिति क्या है ? तो पायेगें पद, पैसा, परिवार को महत्त्व देकर सामाजिक मूल्यों का उपहास हो रहा है। हम अपनी प्रगति, उन्नति, समृद्धि से हटकर दूसरों के लिए कितना सोचते हैं, उनको ऊपर उठाने में हम क्या प्रयास करते हैं, कितना सहयोग करते हैं ? यह विचार शनैः-शनैः समाप्त होते जा रहा है। जब इस प्रकार की प्रवृत्ति रहेगी तो आत्मा की आवाज सुनेगें तो वह कहेगी ये सब तो हम नहीं करते। प्रश्न उठा यदि ये सब तो हम नहीं करते, तो फिर प्रश्न उठा, नहीं करते तो भी क्या सामाजिक हैं ? उत्तर हो सकता है, हमारा उत्तर - मौन हो, किन्तु सत्यता है, नहीं, सामाजिक नहीं है। समाज आज हिंसक पशुओं से अधिक भयभीत मानव कृति से है। समाज को शोषित करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। ये धनबल, जनबल, कुर्सीबल से भले ही सामाजिक बने रहें किन्तु वास्तव में ये असामाजिक हैं, ऐसी प्रवृत्ति की उपेक्षा कर समाज को सावधान करना चाहिए, रक्षा करना चाहिए। अरे, समाज आपसी संगठन, सहयोग, एक-दूसरे के प्रति सद्भावना किसी के दुःख में दुःखी होना, किसी की उन्नति में उसकी प्रसन्नता को बांटना, गिरे हुए को उठाना, अभाव में सहयोग देना आदि, विचारों की महत्त्वपूर्ण नींव पर बना है। ये उसके नियम हैं, उसके प्रत्येक

...शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 1 का शेष

मुझे आर्य समाज ....

सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी मंत्री, मा. रामपाल जी, कन्यागुरुकुल देहरादून से आचार्या सन्तोष आर्या जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से, आचार्य यशपाल जी, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी से डॉ. राजकुमार रावत जी, राजस्थान से स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी (सांसद), स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी (गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली) स्वामी धर्ममुनि जी (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़), डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल। साध्वी उत्तमायति संचालिका सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल दिल्ली डा. योगानन्द शास्त्री पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली एवं माननीय श्री संतोष गंगवार जी केन्द्रीय कपड़ा मंत्री, श्री महेश गिरि जी (सासंद) एवं श्री यशपाल आर्य जी निगम पार्षद पूर्वी दिल्ली तथा वरिष्ठ पत्रकार श्रीमती किरण चौपड़ा जी आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) को उनके 92 वें जन्मदिवस के अवसर पर शुभकामनाएं दीं और उनके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना की। उपस्थित सभी आर्य जनों ने महाशय जी को 100 वर्षों से अधिक आयु तक स्वस्थ जीवन धारण करते हुए समाज सेवा करने की वृहद् शुभकामनाएं दी।

आर्य जगत् के संन्यासीवृन्द विद्वत्गण, गणमान्य व्यक्तियों तथा उपस्थित सभी आर्य महानुभावों की शुभकामनाओं को स्वीकार करते हुए महाशय जी ने कहा कि आप मुझे आशीर्वाद दें कि मैं समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करता रहूं। ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा कि – प्रभु ने ही मुझे समाज की सेवा करने का सामर्थ्य दिया है। ईश्वर मुझे और शक्ति व बल दे कि जिससे मैं और अधिक आर्य समाज की सेवा कर सकूं।

साथ ही उन्होंने घोषणा की कि जल्द ही एक ऐसे केन्द्र वेदाध्ययन की स्थापना की जाएगी जिसमें विद्वान उपदेशक प्रशिक्षित किए जाएंगे जो देश-विदेशों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार उत्कृष्ट पैमाने पर करेंगे।

इस अवसर पर आर्य विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने सुन्दर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की मनमोहक प्रस्तुति दी जिनमें मुख्य रूप से एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, द्वारका, एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, जनकपुरी, महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर, सुभाष नगर, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, न्यू मोती नगर, आर्य वीर दल, आर्य समाज प्रीतविहार गुरू विरजानन्द संस्कृत कुलम हरिनगर, आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस व चन्द्र आर्य विद्या मंदिर ईस्ट ऑफ कैलाश एवं आर्य कन्या गुरुकुल, सैनिक विहार आदि विद्यालय ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विभिन्न विद्यालयों द्वारा इन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के लिए संयोजिका श्रीमती वीणा आर्या जी एवं श्रीमती सरोज यादव जी, श्रीमती अंजलि कोहली, (प्रधानाचार्या एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल), श्रीमती उषा रेहानी (प्रधानाचार्या आर्य पब्लिक स्कूल) और श्रीमती अनिता चौहान जी का मुख्य रूप से सहयोग रहा । इसके पश्चात् शान्ति पाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

-विनय आर्य, महामंत्री

राष्ट्र कवि सारस्वत मोहन मनीषी का स्वागत करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, शुभकामनाएं देते केंद्रीय कपड़ा मंत्री श्री संतोष गंगवार जी, सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, सांसद श्री महेशगिरि जी, वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब की अध्यक्षता श्रीमती किरण चौपड़ा एवं आशीर्वाद देते स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानंद जी, स्वामी देवव्रत सरस्वती, स्वामी यज्ञमुनि जी एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द।

इस अवसर पर प्रस्तुत की गई विभिन्न विद्यालयों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां।

पृष्ठ 1 का शेष

शहीद-दिवस के ....

इस अवसर पर श्री यशपाल शास्त्री जी ने दक्षिणा के रूप में यह माँगा कि प्रतिवर्ष मण्डावली क्षेत्र में तीनों अमरशहीदों का बलिदान दिवस मनाया जाय। यही मेरी सच्ची और अच्छी दक्षिणा होगी। सभी यजमानों ने संकल्प लिया कि प्रति वर्ष शहीदी दिवस अवश्य मनाएंगे इस अवसर पर श्रीमती ऊषा किरन कथूरिया एवं श्री मेहता रवीन्द्र आर्य, श्री मुकेश गोस्वामी जी ने आशीर्वाद दिया।

श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी वरिष्ठ उपप्रधान आर्य केन्द्रीय सभा की अध्यक्षता में शहीदों की याद में सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंच संचालन श्री रामनिवास गुप्ता जी ने किया। श्री सन्दीप आर्य एवं श्री रोहताश आर्य ने भजन प्रस्तुत किए । वैदिक शिक्षा केन्द्र आर्य समाज प्रीतविहार के छात्र-छात्राओं की प्रस्तुति 'आयी फौज दयानन्द वाली' ने सबका मन मोह लिया । इस समय 5000 लोग उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुदेशना जी निगम पार्षद, श्री राजीव आर्य जी महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य उपस्थित थे। आर्य वीरदल शाखा शहीद भगत सिंह (आर्यसमाज प्रीतविहार) के आर्य युवकों ने व्यायाम शिक्षक श्री प्रेम आर्य जी के नेतृत्व में स्तूप निर्माण एवं शानदार व्यायाम प्रदर्शन किया जो दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर रहा था।

'जरा याद करो कुर्बानी'-------- की सन्ध्या सभा में श्री प्रेम आर्य जी ने जादू का शो दिखाया। इस जादूगर के शो को देखने के लिए पार्क के पास में लग रहे रविवार बाजार के लोग भी हजारों की संख्या में आ गए।

इसके पश्चात् शहीदों के नाम कवि सम्मेलन आरंभ हुआ इसमें विख्यात कवि मधुर, विजय विनम्र, योगेश समदर्शी, पी. के. आजाद, आर, के, भारद्वाज, कलाम भारती, प्रियंका राय ने ओज एवं हास्य की कविताएँ प्रस्तुत की श्रोता रात्रि 9:30 बजे तक उपस्थित रहे और अमर शहीदों को श्रद्धांजलि प्रदान की। इस अवसर पर श्री कृष्णकुमार ढींगरा (मंत्री आर्य समाज प्रीत विहार), अतुलकुमार आर्य (मंत्री आ.स. मण्डावली) अशोक बाबू गुप्ता, अनिल कुमार शर्मा, ओम प्रकाश मलिक सहित आर.डब्लू. ए. मण्डावली के सभी पदाधिकारियों सहित हजारों लोग उपस्थित थे। अन्त में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि आर्य समाज प्रीतविहार, मानव के बच्चों के निर्माण का कार्य करता है। इसका प्रमाण आज का ये शहीदी दिवस का कार्यक्रम है। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

'उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द और आर्य समाज'

उपन्यास सम्राट की उपाधि से अलंकृत लेखक मुंशी प्रेमचंद अपनी उत्कृष्ट लेखक शैली के कारण भारतीय जन मानस के हृदय में निवास करते हैं। उच्च आदर्श की जो झलकियां उनके साहित्य में प्रकट होती है। वही उनके आचरण में भी परिलक्षित होती है, जिसका कारण था उनके जीवन पर महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज की गहरी छाप। इस ऐतिहासिक तथ्य को सप्रमाण स्पष्ट करते हुए भी मनमोहन कुमार आर्य जी का यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है, जिससे पाठकवृंद मुंशी प्रेमचंद जी के विचारों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि से अवगत हों। -संपादक

आर्य समाज उन्नीसवीं शताब्दी व उसके बाद देश का सामाजिक व राजनैतिक क्रान्ति का एक महान संगठन था व है जिसने अपनी मनुष्य जीवन के उद्देश्य को सफल करने वाली तर्कसंगत विचारधारा के कारण देश के सभी मतों व सम्प्रदायों को प्रभावित किया। महर्षि दयानन्द जिन अंग्रेज अधिकारियों, पादरियों, मौलवियों व विद्वानों आदि से मिलकर वार्तालाप करते थे, वह सभी उनके विचारों से सहमत होते थे। यही कारण था कि अनेक प्रमुख हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई मतानुयायी उनके विचारों से सहमति रखते थे। इस लेख में हम उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी के आर्य समाजी विचारों व सम्बन्धों पर चर्चा कर रहे हैं। हमारा निष्कर्ष है कि वह विचारों, कार्यों व मान्यताओं से पूरी तरह से आर्य समाज द्वारा प्रवर्धित वैदिक धर्म के अनुयायी थे।

मुंशी प्रेमचन्द जी ने उर्दू में 'आपका चित्र' नामक एक कहानी तीन अध्यायों में लिखी थी जो लाहौर के उर्दू पत्र 'प्रकाश' में सन् 1929 में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी के पहले भाग में उन्होंने आर्यसमाज के लोगों द्वारा महर्षि दयानन्द का अपने घरों में चित्र लगाये जाने को मूर्तिपूजा से भिन्न होने या न होने पर बहुत ही मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला है। मूर्तिपूजा व चित्रपूजा का ऐसा सशक्त भावपूर्ण चित्रण इससे पूर्व कहीं पढ़ने को नहीं मिलता। यह उनके आर्य समाजी होने का सबसे बड़ा प्रमाण माना जा सकता है। वह लिखते हैं - 'लोग मुझ से कहते हैं तुम भी मूर्ति-पूजक हो। तुम ने भी तो स्वामी दयानन्द का चित्र अपने कमरे में लटका रखा है। माना कि तुम उसे जल नहीं चढ़ाते हो। इसको भोग नहीं लगाते। घण्टा नहीं बजाते। उसे स्नान नहीं कराते। उसका श्रृगांर नहीं करते। उसका स्वांग नहीं बनाते। उसको नमन तो करते ही हो। उसकी (ऋषि दयानन्द की) विचारधारा को तो सिर झुकाते हो, मानते ही हो। कभी-कभी माला व फलों से भी उसका सम्मान करते हो। यह पूजा नहीं तो और क्या है?'

इन सभी प्रश्नों का उत्तर देते हुए मुंशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं - 'उत्तर देता हूं कि श्रीमन् इस आदर व पूजा में अन्तर है। बहुत बड़ा अन्तर है। मैं उसे अपने कक्ष में इसलिए नहीं लटकाये हुए हूं कि उसके दर्शन से मुझे मोक्ष की प्राप्ति होगी। मैं आवागमन के चक्कर से छूट जाऊंगा। उसके दर्शन मात्र से मेरे सारे पाप धुल जायेंगे अथवा मैं उसे प्रसन्न करके अपना अभियोग जीत जाऊंगा अथवा शत्रु पर विजय प्राप्त कर लूंगा किंवा और किसी ढंग से मेरा धार्मिक अथवा सांसारिक प्रयोजन सिद्ध हो सकेगा। मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाये हुए हूं कि स्वामी जी के जीवन का उच्च व पवित्र आचरण सदा मेरे नयनों के सम्मुख रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाये, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगायें अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो। दृढ़ता धीरज बने रहें। क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुंचा है और एक बार नहीं कई बार।'

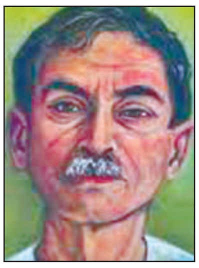

कहानी के दूसरे भाग में एक राजा का वर्णन किया गया है जो अपने एक विश्वसनीय सेवक को अपनी पसन्दीदा महिला के प्रेमी की हत्या का कार्य सौंपता है और उस कार्य को करने के बदले में अकूत सम्पत्ति देने का वायदा करता है। युवक प्रलोभनवश तैयार हो जाता है परन्तु घर जाकर दीवार पर स्वामी दयानन्द का चित्र देखकर अपने निर्णय को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के विपरीत जानकर पश्चाताप करता है और, परिणाम की चिन्ता न कर, साहस करके राजा साहब के पास जाकर अपनी असमर्थता व्यक्त करता है। इस पर उसे अनेक कटु बातें सुनने को मिलती है। राजा साहेब होंठों को दांतों से काटकर बोले, 'बहुत अच्छा जाओ और आज ही रात को मेरे राज्य की सीमा से बाहर निकल जाओ। सम्भव है कल तुम्हें यह अवसर न मिले।' उसी लहर में उन्होंने उस पूर्व विश्वसनीय युवक को नमकहराम, टेढ़ी बुद्धि वाला, अधम और जाने क्या-क्या कहा। प्रणाम कर वह युवक चला जाता है। उसी रात्रि को अकेले ही कुछ वस्त्र और कुछ रुपये एक सन्दूक में रखकर घर से निकल पड़ा। हां! स्वामी जी का चित्र उसके सीने से लगा हुआ था। इस कहानी में मुंशी प्रेमचन्द जी ने स्वामी दयानन्द व उनके चित्र के प्रति अपने मनोभावों को प्रस्तुत किया है। ऐसे दयानन्द भक्त मुंशी प्रेमचन्द का सारा आर्य जगत वन्दन करता है।

मुंशी प्रेमचन्द जी के आर्य समाज से सम्बन्धों पर लिखते हुए आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु कहते हैं कि प्रेमचन्द जी को आर्य समाज के दो ऐतिहासिक सम्मेलनों में ससम्मान आमन्त्रित किया गया था। उनका लाहौर में आर्यों के विराट् सम्मेलन में दिया गया भाषण भी हमारे देश के छद्म धर्म निरपेक्ष लोगों की पुस्तकों में उपेक्षित रहा और देश के सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्वामी श्रद्धानन्द जी के गुरूकुल कांगड़ी में दिया गया व्याख्यान भी इनके बहिष्कार का शिकार हो गया। जिज्ञासु जी के अनुसार मार्क्सवादी लेखकों ने प्रेमचन्द जी के आर्य समाज से यथार्थ सम्बन्धों की अपने लेखन में उपेक्षा की और किसी ने उन्हें गोर्की का चेला सिद्ध किया तो किसी ने कुछ गांधीवादी बना दिया। वह पूछते हैं कि उस युग का कौन सा हिन्दी प्रेमी, देशभक्त साहित्यकार है जिस पर महर्षि दयानन्द के जीवन व विचारधारा की छाप नहीं पड़ी? वह लिखते हैं कि आश्चर्य की बात यह है कि विश्वप्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन जी के अभिन्न हृदय मित्र मुंशी प्रेमचन्द जी को ऐसे प्रस्तुत किया जा रहा है कि मानों वे आर्यसमाज से परिचित ही नहीं थे। आर्य विद्वान लिखते हैं कि आन्ध्र के प्रो. रंगा, बंगाल के क्रान्तिकारी श्री चक्रवर्ती, केरल के श्री मन्नम, तामिलनाड के श्री सत्यमूर्ति जी तो निःसंकोच ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द व आर्यसमाज का अपने जीवन पर प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव स्वीकार करते रहे जब कि इन प्रदेशों में आर्यसमाज का प्रभाव अधिक नहीं था। वह कहते हैं कि उत्तर प्रदेश में जन्मे-पले मुंशी प्रेमचन्द जिनका कार्यक्षेत्र भी मुख्यरूप से उत्तर प्रदेश ही रहा, उनके जीवन को आर्य समाज से अप्रभावित चित्रित करना सत्य का गला घोंटने जैसी बात है। जिस महान् मनीषी प्रेमचन्द को आर्यसमाज के अपने मासिक सदस्यता शुल्क की चिन्ता बनी रहती थी, उसे आर्यसमाज से दूर करने का पाप किया जा रहा है। आगे जिज्ञासु जी लिखते हैं कि हां, एक शोधकर्त्ता जिस ने प्रेमचन्द जी पर पी-एच.डी. किया है उसके शोध का विषय ही मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य पर आर्यसमाज का प्रभाव है परन्तु यह शोध प्रबन्ध अभी तक प्रकाशित ही नहीं हुआ।

मुंशी प्रेमचन्द जी एक बार हमीरपुर, उत्तर प्रदेश के राजकीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक होकर आए। यहां आपका आर्य समाज के अनुयायी बाबू महादेव प्रसाद श्रीवास्तव तथा अनेक अन्य आर्य समाजियों से सम्पर्क हुआ और परस्पर मधुर सम्बन्ध बने। इन सभी को साथ लेकर आपने हमीरपुर में आर्यसमाज तथा आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना की। उन दिनों आप धनपतराय जी के नाम से जाने जाते थे। श्री बाबू महादेव प्रसाद जी के साले श्री जंगबहादुर आपके एक प्रिय विद्यार्थी थे।

मुंशी प्रेमचन्द जी में विधवा विवाह के लिए बड़ा उत्साह व जोश था। आपके लेखन मुख्यतः कहानियों में आर्यसमाज के आदर्शवाद व सुधारवादी विचारधारा की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। जन्मना जातिवाद, फलित ज्योतिष, मूर्ति पूजा आदि पर आप अपनी कहानियों में कड़े प्रहार करते रहे। जीवन में पुरूषार्थ, परमार्थ तथा स्वदेश-प्रेम आदि आपकी कहानियों के मुख्य विषयों में सम्मिलित हैं जिसकी प्रेरणा आपने महर्षि दयानन्द के साहित्य और आर्य समाज के आन्दोलनों से प्राप्त की थी। आपने पाप क्षमा नहीं होते तथा कर्मों का फल आदि विषयों पर भी अनेक कहानियां लिखीं। लाहौर से आपकी उर्दू कहानियों का एक संग्रह 'देहाती अफसाने' नाम

जिला आर्य सम्मेलन मोतीहारी (बिहार) सम्पन्न

गौ हत्या रोकने के लिए बिहार में कानून बनाएंगे - राधा मोहन सिंह, केंद्रीय कृषि मंत्री

गत दिनों बिहार के मोतीहारी में जिला स्तरीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री विनय आर्य बिहार सभा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद एवं मंत्री श्री रमेन्द्र गुप्त तथा केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने पहुंचकर आर्य जनों का उत्साह वर्धन किया। इस अवसर पर कृषि मंत्री ने मोतीहारी के आर्य विद्यालयों के विकास हेतु 10 लाख रुपए की राशि भेंट की। उन्होंने आर्य जनता को आश्वासन दिया कि बिहार में भाजपा सरकार बनने पर गौ हत्या रोकने के लिए कानून बनाएंगे।

पृष्ठ 3 का शेष

सदस्य को सदस्य बने रहने के मापदण्ड हैं। जो इन सिद्धान्तों को नहीं मानता वह सामाजिक कहलाने का अधिकारी नहीं है, वह असामाजिक है। मानवीय आदर्शों वाला ही समाज को व्यवस्थित रख सकता है, जिसके पास सामाजिक आदर्श नहीं वह समाज को अव्यस्थित कर देता है, इसलिए उसे असामाजिक तत्व के नाम से

सामाजिकता की... पुकारा जाता है। ऐसे असामाजिक तत्वों के कारण ही समाज पनप नहीं रहा है, शोषित है, भयभीत है, दु:खी है। समाज रूपी बेल इनके दुष्कर्मों से सूख रही है। जिस बेल में सुख, शान्ति, प्रसन्नता रूपी सुगन्धित पुष्प होना चाहिए, उनका जीवन भय, दु:ख, असुरक्षा, चिन्ता ने ले लिया। विडम्बना है, समाज रूपी इमारत में चारों ओर से आग लग रही है, किन्तु इसमें रहने वाले बेंखबर और गहरी नींद में सो रहे हैं। शीर्षक की ओर पुन: ध्यान देवें समाज की बेल सूख रही है। आज आवश्यकता है उस सूखती हुई बेल को पुन: हरीभरी पल्लवित करने के लिए नैतिकता रूपी पानी की, संगठन-सौहार्दता रूपी खाद की और दूषित विचारों से मुक्त वायु की। यदि ऐसा हुआ तो ही समाज सुरक्षित रहेगा अन्यथा समाज और समाज का अन्तर मिट जावेगा।

पृष्ठ 5 का शेष

'उपन्यास सम्राट...

से प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह में प्रकाशित सभी कहानियों में ऋषि दयानन्द की विचारधारा ओतप्रोत है। मुंशी प्रेमचन्द जी पर लिखने वाले लेखकों द्वारा 'जमाना', 'हंस' व 'माधुरी' आदि पत्रों की चर्चा तो की जाती है परन्तु साप्ताहिक 'प्रकाश' उर्दू पत्र की चर्चा जाने-अनजाने छोड़ दी गई है। महर्षि दयानन्द पर आधारित आपकी रचना व कहानी 'आपकी तस्वीर', जिसका उल्लेख पूर्व किया गया है, 'प्रकाश' साप्ताहिक में ही प्रकाशित हुई थी। यह एक तथ्य है कि मुंशी प्रेमचन्द जी 'प्रकाश' के लिए नियमित रूप से लिखा करते थे और वर्ष में आपकी अनेक कहानियां 'प्रकाश' में प्रकाशित हुआ करतीं थीं। यह ज्ञातव्य है कि 'प्रकाश' उर्दू पत्रकारिता के पितामह महाशय कृष्ण द्वारा प्रकाशित किया जाने वाला साप्ताहिक पत्र था।

यह बता दें कि प्रसिद्ध कहानीकार श्री सुदर्शन -महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के निष्ठावान अनुयायी थे। श्री उमेश माथुर ने सुदर्शन जी की मृत्यु पर 'पण्डित सुदर्शन' शीर्षक से एक लेख लिखा था जो उर्दू साप्ताहिक 'वैदिक धर्म', जालन्धर के 15 फरवरी, 1968 के अंक में प्रकाशित हुआ था। इस लेख में सुदर्शन जी की पत्नी श्रीमती लीलावती जी द्वारा सुनाया गया प्रसंग श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने अपने एक लेख में प्रस्तुत किया है। इसमें सुदर्शन जी की पत्नी ने यह बताया था कि मुंशी प्रेमचन्द से सुदर्शन जी की घनिष्ठ मित्रता थी। घण्टों दोनों चौबारे पर बैठे रहते थे। मैं चाय बना-बनाकर भेजा करती और कभी कभी यह भी सोचा करती कि ये दोनों घण्टों बैठे-बैठे क्या बातें करते हैं जो समाप्त ही नहीं होतीं। एक दिन कान लगाकर सुना तो मुंशी प्रेमचन्द जी कह रहे थे, आप कलकत्ता की पत्रिका पर मत जाइये। आपके साथ हिन्दी के सब पत्र हैं। मैंने आपकी फिल्म 'धूप छाओं' देखी है। मुझे पसन्द है। कुत्ते भौंकने से कोई हाथी तो नहीं रूका। श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी कहते हैं कि मुंशी प्रेमचन्द जी का एक विधवा स्त्री श्रीमती शिवरानी देवी जी से विवाह करने का साहस उनको आर्यसमाज से ही प्राप्त हुआ था। इसे कोई झुठला नहीं सकता। महर्षि दयानन्द की विचारधारा के गहरे प्रभाव के कारण ही वे उस अन्धकारमय युग में यह क्रान्तिकारी पग उठा सके थे। आगे वह लिखते हैं कि बहुत कम लोगों को इस बात का पता होगा कि प्रेमचन्द जी के परिवार में एक विधर्मी देवी को बहू के रूप में अपनाया गया। यह महर्षि दयानन्द की छाप का ही एक और उदाहरण है। सन् 1903 में प्रेमचन्द जी प्रयाग के टीचर ट्रेनिंग कालेज में प्रविष्ट हुए थे। उस समय आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय वहां उनके सहपाठी थे। उपाध्याय जी ने अपनी आत्म कथा 'जीवन-चक्र' में लिखा है कि मेरे ट्रेनिंग कालेज के सहपाठी थे मुंशी धनपतिराय जी। आगे चलकर 'मुंशी प्रेमचन्द' के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह 'रणपतिराय' के कल्पित नाम से उर्दू पत्रों में लेख लिखा करते थे। उन्होंने मुझे भी साहित्यिक कहानियां लिखने की प्रेरणा की थी। परन्तु उनके मेरे मार्ग अलग ही रहे अर्थात् उनका लेखन धर्म, दर्शन, संस्कृति आदि विषयों पर हुआ। उपाध्याय जी शैक्सपियर के नाटकों का हिन्दी अनुवाद करने वाले प्रथम साहित्यकार भी हैं जिसका एक संस्करण कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ। मुंशी प्रेमचन्द जी माधुरी के सम्पादक भी रहे। उनके काल में इस पत्रिका में विविध प्रकार की सामग्री प्रकाशित होती थी। साहित्यिक संसार में इस पत्रिका का एक विशेष स्थान था। प्रेमचन्द जी ने तब अपने पूर्व सहपाठी श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय को कोई लेखमाला आरम्भ करने को कहा। उपाध्यायजी अपने मित्र का आग्रह टाल न सके। लेखमाला आरम्भ हो गई। पाठको ने इस लेखमाला को पसन्द किया। ढेर सारे पत्र माधुरी के कार्यालय में आने लगे। लेख माला का विषय था 'अद्वैतवाद'। अत: कुछ पोंगापंथी रूढ़िवादी लोगों ने इस लेखमाला का विरोध भी किया। माधुरी के संचालकगण वैचारिक आधार पर अद्वैतवादी विचारधारा के लोगों के निकट थे। अत: उनके द्वारा प्रेमचन्द जी पर लेखमाला बन्द करने का दबाव बनाया गया। प्रेमचन्द जी इस दबाव के विरुद्ध तथा लेखमाला के प्रकाशन के पक्ष में थे। परन्तु वह अपने मन की इच्छा पूरी नहीं कर सके। वह उपाध्याय जी के पास गये और वस्तु स्थिति से उन्हें अवगत कराया। इसके बाद संचालकगणों ने प्रेमचन्दजी की भावना के विरुद्ध माधुरी में प्रकाशनार्थ अद्वैतवाद के समर्थन में किसी लेखक से लेख लिखवाया। अत: स्वाभिमानी प्रेमचन्द जी माधुरी के साथ अधिक समय तक जुड़े न रह सके और अपने दायित्वों का त्याग कर दिया। मुंशी प्रेमचन्द जी ने अपने जीवन की अन्तिम वेला तक आर्य समाजी पत्रों में लिखते रहे। उनके लेखों में ईश्वर के सर्वव्यापक स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। उन्होंने इस आर्य सिद्धान्त पर डटकर लिखा है। सबको अपनाना, किसी को अस्पृश्य न मानना, आर्य धर्म के बन्द द्वार सबके लिए खोलना, दीनों की रक्षा, धेनु की रक्षा, प्राणिमात्र से प्यार, प्रेमचन्द जी ने इन सब विषयों पर लिखा है और आर्य समाज का गुणगान किया है। निष्कर्षत: कह सकते हैं कि मुंशी प्रेम चन्द जी अपने जीवन में महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े रहे। उनकी सफलता का एक प्रमुख कारण उनका आर्य विचारधारा को अपनाना था। इसके माध्यम से उन्होंने आर्य विचारधारा का भूरिश: प्रचार-प्रसार किया। वह आर्य समाज के गौरव थे। आर्य विद्वान् प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने मुंशी प्रेमचन्द जी की उर्दू कहानी 'आपकी तस्वीर' की खोज कर व उसका हिन्दी अनुवाद कर उसे 'आपका चित्र' नाम से प्रकाशित कराया है जिसके लिए वह देश की जनता की ओर से श्रद्धा एवं बधाई के पात्र हैं। इन्हीं पंक्तियों के साथ इस लेख को विराम देता हूं।

-मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाजें कृपया ध्यान दें

आप सबको विदित ही है कि दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम द्वारा आर्यसमाज से जुड़े महापुरुषों के नाम पर दिल्ली में कुछ मार्गों, पार्कों, चौक-चौराहों, बाजारों तथा संस्थानों आदि का नामकरण हुआ है। इससे आम लोगों को आर्यसमाज और इसके महापुरुषों के बारें में पता चलता है। इसके साथ ही ये सारे तथ्य सरकारी रिकार्ड में आ जाते हैं। आर्यसमाज के इतिहास के लेखन में ये सब सहायक बनते हैं। परन्तु प्राय: यह भी देखने में आता है कि जब-तब ऐसे मामलों को लेकर विवाद खड़ा हो जाता है और सरकार या नगर निगम उनका नामान्तरण कर देती है, तब हमारे पास जरूरी रिकार्ड का अभाव होता है। अत: ऐसे स्थलों के नामकरण के संरक्षण को लेकर हमें सदैव सजग रहने की जरूरत है। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए सभा इन सबका कम्प्यूटरीकृत रिकार्ड (संकलन) तैयार कर रही है। परन्तु यह कार्य आप सबके सहयोग से ही संभव है। यदि आपके घर, दुकान, कार्यालय और आसपास के क्षेत्र में आर्यसमाज से जुड़े महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क, चौक-चौराहा, बाजार, संस्थान आदि हैं तो उनका नामकरण कब हुआ? उनका नामकरण किस एजेंसी ने पारित किया- जैसे डी.डी.ए., एन.डी.एम.सी., एम.सी.डी. दिल्ली सरकार आदि-आदि। उनका लोकेशन क्या है आदि की जानकारी सभा कार्यालय को उपलब्ध कराने का कष्ट करें। हो सके तो ऐसे स्थलों पर लगी नाम पट्टिका जिन पर आर्यसमाज के महापुरुषों के नाम अंकित हों उनकी फोटो उपलब्ध करा दें तो हम सबके लिए वे बहुत ही महत्वपूर्ण और लाभकारी होंगे। भविष्य में यदि कभी ऐसे मामलों पर विवाद होता है तो हम उसके लिए आप द्वारा उपलब्ध कराये गये तथ्यों एवं फोटो के आधार पर अपना पक्ष सरकार या कोर्ट के समक्ष पूरी दृढ़ता के साथ रख सकते हैं। ऐसे मार्गों, पार्कों आदि की सूची आर्यसन्देश में प्रकाशित करेंगे। यह जानकारी **aryasabha@yahoo.com** पर भी भेज सकते हैं।

विनय आर्य, महामंत्री

'11वें वैवाहिक परिचय सम्मेलन' में अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 11 वां वैवाहिक आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन 3 मई 2015 को आर्य समाज विवेक विहार नई दिल्ली में आयोजित होगा। समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि अपने विवाह योग्य हो चुके पुत्र-पुत्रियों एवं संबंधियों का पंजीकरण अवश्य करवाएं।

पंजीकरण की अंतिम तिथि 20 अप्रैल है। रजिस्ट्रेशन फार्म **www.thearyasamaj.org** से भी डाउनलोड किया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन शुल्कमात्र-200 रुपये है। सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की भी सुविधा उपलब्ध होगी। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम रु. 200/-(दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001' के पते पर भेज दें।

अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता संख्या 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमाकराकर रसीद फार्म के साथ भेजें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र 20 अप्रैल 2015 तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएँगे, उनके ही परिचय 'आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका' में प्रकाशित हो सकेंगे। तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम एवं विवरण सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर 15 मई 2015 के बाद देखे जा सकेंगे। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा जी से मो. (09414187428) पर संपर्क करें।

एस.पी. सिंह संयोजक, दिल्ली।
मो. 09540040324

गुरुकुल में समावर्त्तन संस्कार

20 फरवरी 2015 गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सभागार में शुक्रवार को द्वादश कक्षा की विदाई पर समावर्तन संस्कार समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर गुरूकुल के प्राचार्य डा. देवव्रत आचार्य ने कहा कि परिश्रमी व श्रद्धावान विद्यार्थियों को ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। जिन विद्यार्थियों के हृदय में अपने गुरू के प्रति सम्मान-भावना होती है, वही सर्वोच्च शिखर पर पहुंचते हैं। गुरूकुल के आचार्यों तथा द्वादश व एकादश कक्षा के विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा हवन किया।

आचार्य वेदमित्र जी को प्रचार वाहन भेंट

स्व० श्री मा० मांगेराम आर्य की स्मृति पर जसराना (सोनीपत) में आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार में मास्टर जी सदैव अग्रणी थे। उन्होंने आर्यसमाज मन्दिर जसराना (सोनीपत) के निर्माण में विशेष सहयोग दिया था। माता श्रीमती सरजोदेवी व उनके पुत्रों ने आचार्य वेदमित्र जी को आर्यसमाज का कार्य करने हेतु 'रीट्ज' (Ritz) गाड़ी भेंट की। आचार्य जी ने उच्च अधिकारी के पद का त्याग करके आर्यसमाज के प्रचार कार्य,

योग तथा भारतीय संस्कृति के संवर्धन में देश-विदेश में प्रचार कर रहे हैं। शांतिपाठ के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। -श्रीमती सरजो देवी

34वां वैचारिक क्रांति शिविर

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, आर्य समाज मंदिर, मेन बाजार रानी बाग के तत्त्वावधान में विद्यार्थियों के संस्कार, राष्ट्र भक्ति एवं चरित्र निर्माण हेतु 34 वाँ वैचारिक क्रांति शिविर 17 मई से 31 मई 2015

स्थान: आर्य समाज मंदिर मेन बाजार रानी बाग, दिल्ली

उद्घाटन समारोह- रविवार 17 मई 2015 सायं 6:00 बजे

यज्ञोपवीत संस्कार एवं संकल्प समारोह - रविवार 24 मई 2015 प्रात: 8:00 बजे

समापन समारोह- शनिवार, 30 मई 2015 सायं 5:00 बजे

विशेष लगभग पिछले 46 वर्षों से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, भारत वर्ष के अनेक ग्रामीण एवं वनवासी क्षेत्रों जैसे आसाम, नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, उड़ीसा एवं राजस्थान इत्यादि प्रांतों के अशिक्षित लोगों में शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराने हेतु कार्यरत हैं। संघ द्वारा लगाए जाने वाले इस वार्षिक शिविर का मुख्य प्रयोजन है कि अनेक प्रांतों के ग्रामीण क्षेत्रों से कुछ युवक-युवतियों को बुलाकर यहाँ दिल्ली में 15 दिनों के शिविर में अपने पास रख उन्हें भारतीय संस्कृति का बोध कराकर इनके हृदय में राष्ट्रीय प्रेम एवं चरित्र निर्माण की भावना जागृत कर सकें जिससे वे विविध प्रलोभनों और मिथ्या आकर्षणों से बचकर अपनी संस्कृति और गौरव की स्वयं रक्षा करें।

जोगेन्द्र खट्टर, महामंत्री, मो. न. 9810040962

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव सम्वत् 2072 बड़ी श्रद्धा व उत्साह से मनाया गया। आर्य समाज की यज्ञशाला में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी धर्मानन्द जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। आर्य जगत् की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति व स्वामी दयानन्द के जीवन पर भजन सुनाए। अश्विनी डोगरा ने कहा दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना कर लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर ले गये और वेद ग्रंथ क्या हैं? इसके बारे में महिमा सुना कर स्वामी दयानन्द जी ने सब को जगा दिया। **-मंत्री**

87 वाँ ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ

पातंजल योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर हरिद्वार

दिनांक: सोमवार 6 अप्रैल से रविवार 12 अप्रैल 2015

शारीरिक, आत्मिक उन्नति के बाद ही सामाजिक उन्नति सम्भव है। आध्यात्मिक उन्नति ही जीवन का चरम लक्ष्य है। जिसमें आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, का प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा यम, नियमादि का पालन भी कराया जायेगा। ऋतु अनुकूल बिस्तर, योगदर्शन, वेदों में योग विद्या, कापी, पेंसिल साथ लायें। शिविर में आयुर्वेद, प्रकृतिक-चिकित्सा एवं योगासनों के माध्यम से भी उपचार किया जाएगा।

साधकों से निवेदन है कि रु0 300/- देकर पंजीकरण कराके अपना स्थान सुरक्षित करें। सेवाभावी विरक्तों का पंजीकरण नि:शुल्क।

-दिव्यानन्द सरस्वती, प्रधान

आवश्कता है।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा निम्नलिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है।

1. ग्राफिक्स डिजाइनिंग (एक्सपर्ट) 2. हिन्दी स्टैनों (हाई स्पीड) 3. हिन्दी टाइपिस्ट, ऑपरेटर, एकाउन्टेन्ट। 4. कम्प्यूटर ऑपरेटर (नेट एक्सपर्ट) 5. ड्राइवर - (पश्चिम तथा मध्य दिल्ली)

सम्पर्क सूत्र 9650183339

Email- aryasabha@gmail.com

रामनवमी के अवसर पर स्वस्ति यज्ञ

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम जन्मोत्सव स्वस्ति यज्ञ के साथ उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ। आर्य समाज जयपुर दक्षिण ने हिण्डौन हाउस में आयोजित राम जन्मोत्सव पर स्वस्ति यज्ञ द्वारा मानव कल्याण एवं विश्व शांति हेतु आहुतियां दी। **-सचिव**

87 वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नई मंडी, मुजफ्फरनगर का 87 वाँ त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव 6 मार्च 2015 को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। श्री राकेश कुमार आर्य जी के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। ब्रह्मा डॉ. धर्मवीर जी कार्यकारी अध्यक्ष, परोपकारिणी सभा अजमेर ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि देव दयानन्द ने राष्ट्र और विश्व को वेद ज्ञान की उपयोगिता का भान कराया और बताया कि आर्य समाज ही एकमेव मार्ग है जिसमें संसार का कल्याण संभव है। आर्य रत्न आचार्य गुरुदत्त आर्य ने कहा कि यदि देश बचाना चाहते हो तो जातिवाद को मिटाओ। यहां पर श्री कृष्ण आर्य व श्री तेजपाल सिंह आर्य को आर्य समाज की ओर से सम्मानित किया गया। कुँवर सुखलाल आर्य प्रभाकर व सहदेव सिंह बेधडक आदि विद्वानों के उपदेश व भजन भी हुए। **-मंत्री आरपी सिंह**

34वां वाषिकोत्सव

आर्य समाज यमुना विहार

8 अप्रैल से 12 अप्रैल 2015 तक
आचार्य श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी
भजनोपदेशक पं. कुलदीप आर्य जी
महिला सम्मेलन 11 अप्रैल 2015 को समय दोपहर 2 से 5 बजे तक
समापन समारोह (12 अप्रैल)
यज्ञपूर्णाहूति- 9: 30 बजे।
भजन व प्रवचन- 9.45 से 1:30 बजे।

श्री विश्वास वर्मा, मंत्री।

वेद पारायण यज्ञ का "रजत जयन्ती समारोह"

दिनांक 16 मई से 20 मई 2015 को ग्राम-नेनोरा जिला-मन्दसौर (म.प्र.) में रजत जयन्ती महोत्सव के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र जी आचार्य नोएडा। **कार्यक्रम:**17 से 29 मई 2015, यज्ञ -प्रात: 7:00 से 9:00 एवं सायं 4:00 से 6:00 बजे, भजन एवं प्रवचन प्रात: 9.00 से 11.30 बजे, रात्रि 8.00 से 10.00 बजे, आर्य युवक सम्मेलन- दोपहर 1:00 से 3:00 बजे (17 मई), आर्य महिला सम्मेलन दोपहर 1.00 से 3.00 बजे (18 मई), सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन (19 मई), समापन समारोह (20 मई), यज्ञ की पूर्णाहूति 10.00 बजे, भजन प्रवचन 10.00 से 11.30 बजे, प्रमुख विद्वान्- आचार्य वेदप्रकाशजी श्रोत्रिय, प्रमुख वक्ता: डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री अहमदाबाद, आचार्या सूर्यादेवी।

डॉ. प्रशास्यमित्र शास्त्री को उ.प्र. संस्कृत संस्थान का विशिष्ट पुरस्कार

आर्य जगत् के प्रसिद्ध उपदेशक एवं संस्कृत भाषा के प्रख्यात् कवि एवं लेखक डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री को संस्कृत भाषा की उनकी सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए उ.प्र. संस्कृत अकादमी ने उन्हें यह विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया है। यह पुरस्कार विधान सभाध्यक्ष श्री माता प्रसाद पाण्डेय जी के कर कमलों से प्रदान किया गया। विगत 22 मार्च 2015 को शाल एवं 51000/- रुपये की धनराशि भी प्रदान की गई।

आर्य समाज गोनी का वार्षिक उत्सव

दिनांक 23, से 25 फरवरी 2015 को हरदोई जनपद की अत्यंत प्रतिष्ठित एवं प्राचीनतम आर्य समाज गोनी का वार्षिक उत्सव समारोह पूर्वक श्री विमल कुमार एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रख्यात् भजनोपदेशक श्री जुगुल किशोर आर्य के भजनोपदेश हुए।

-विमल कुमार एडवोकेट

गुमशुदा

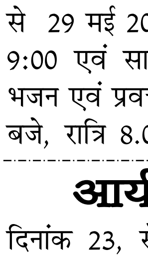

मेरे भाई, श्री रामकृष्ण मित्तल पुत्र श्री माधोराम मित्तल निवासी ग्राम व डाक झिझांना जिला -शामली उ0प्र0 कि 2 वर्ष से कोई जानकारी नहीं हैं। 10 वर्ष पहले चोट लगने से विकलांग हो गए थे। ये मित्तल शामली वाले नाम से प्रसिद्ध हैं और सारे भारत में घूम-घूम कर दीवारों पर लेखन से प्रचार करते रहे हैं। कृपया सूचना निम्न पते पर देने की कृपा करें। - **ब्रजभूषण मित्तल सुपुत्र माधोराम मित्तल, झिझांना (शामली)**

मो. 8394051900, 09412639870

व्हाट्स एप पर सूचना मंगाने हेतु
दिल्ली सभा द्वारा व्हाट्स एप नं. जारी

आर्य समाज से जुड़ने व सोशल मीडिया द्वारा आर्य समाज सम्बन्धी सूचना 'व्हाट्स एप' पर प्राप्त करने के लिए इस नम्बर 09540045898 को अपने फोन में सेव करके इस नम्बर पर अपना नाम ....राज्य लिखकर भेजें, ध्यान रहे आपके फोन में ये नम्बर सेव होने पर ही सूचना आप तक पहुँच पाएगी। धन्यवाद !

(विनय आर्य) महामंत्री, दि.आ.प्र.सभा

वर चाहिए

आर्य परिवार की सुन्दर,स्वस्थ, संस्कारी गृहकार्य में दक्ष कन्या । अग्रवाल, एरन गोत्र, लम्बाई 5'1' एम.कॉम्/बी.एड. जन्मतिथि 27 अप्रैल 1986 हेतु। सुन्दर, स्वस्थ, आर्य विचारधारा की मान्यताओं वाला, सर्विसमेन अथवा बिजनेस मेन, वर चाहिए।

सम्पर्क सूत्र
मो. 9837773024

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 30 मार्च से रविवार 5 अप्रैल, 2015
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 02/03 अप्रैल, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 01 अप्रैल, 2015

आर्यजन कृपया ध्यान दें आर्यसमाजों में प्रचार हेतु एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाओं का लाभ लें

सभी समाजों के अधिकारियों से सानुरोध प्रार्थना करते हुए विशेष सूचना दी जा रही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि द्वारा जो प्रचार वाहन चलाया जा रहा है उसमें बहुत अच्छा भजनीक है जो अपने साथियों के साथ सुन्दर भजन व प्रचार का कार्य कर रहा है। आप इनको वाहन सहित या जिस आर्य समाज मन्दिर के आगे वाहन खड़ा करने की जगह न हो तो भी भजनीक को बुला सकते हैं। वाहन में वैदिक साहित्य प्रचार सामग्री भी उपलब्ध रहेगी। इस वाहन पर होने वाला खर्चा जैसे भजनीक, वादक व वाहन चालक तथा सहायक सभी का खर्चा व वेतन आपकी दि.आ.प्र.सभा द्वारा व्यय किया जाता है यदि आप इसका लाभ उठायें जिससे प्रचार कार्य सरलता पूर्वक बढ़ता रहे, जिसकी समाज को अपेक्षा है।

सम्पर्क करें- एस.पी. सिंह मो. 9540040324

प्रतिष्ठा में,

डॉ. श्वेतकेतु का नागरिक अभिनन्दन

आर्य समाज बरेली के तत्त्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस व नव संवत्सर का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य विद्वान् आचार्य सोमदेव जी ने महर्षिदयानन्द के द्वारा स्थापित आर्य समाज की आवश्यकता व सामाजिक परिवर्तन पर अपने विचार रखे। अनाथालय के प्रधान शशि भूषण अग्रवाल ने आर्य समाज की विचारधारा को जनजन कि पहुंचाने का आह्वान करते हुए नव संवत्सर की शुभकामनाएं प्रदान की। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रखर विद्वान् डॉ. श्वेतकेतु शर्मा के हिन्दी सलाहकार समिति भारत सरकार को सदस्य मनोनीत होने पर नागरिक अभिनन्दन किया गया।

'आस्था' पर प्रेरक वैदिक प्रवचन – प्रतिरात्रिः 9:30 बजे

प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार	- आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	(प्रेरक-प्रवचन)
प्रत्येक बुधवार	- डॉ0 कमलेश कुमार शास्त्री	(आदर्श परिवार)
प्रत्येक गुरुवार	-डॉ0 विनय विद्यालंकार	(व्यक्तित्व-विकास)
प्रत्येक शुक्रवार व शनिवार	- डॉ0 वागीश आचार्य	(प्रेरक प्रवचन)

वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी हेतु पुस्तकें भेजें

सर्व सज्जनों को सूचित किया जाता है कि अपनी लाइब्रेरी से पुरानी पुस्तकें नाम व पता लिखकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित 'वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी' में भिजवाने की कृपा करें। वैदिक ज्ञान की अमूल्य निधि एक छोटी सी पुस्तक हजारों लोगों को लभान्वित कर सकती है। **कृपया अपनी पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजें - वैदिक सन्दर्भ पुस्तकालय, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1**

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन भेजें

आर्ष पाठ-विधि से विद्याध्ययन करने वाले छात्रों को सूचना प्रेषित की जाती है कि जो विद्यानुरागी, अपने अभिभावकों से आर्थिक सहायता नहीं पाते है अथवा माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं। ऐसे विद्यार्थी अपना नाम-पता विद्यालय का नाम और अपने आचार्य महानुभाव के हस्ताक्षर कृत सम्पर्क सूत्र के साथ आवेदन प्रार्थना पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर प्रेषित करें।

महामन्त्री

विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में दिनांक 21 मार्च 2015 शनिवार को प्रातः 7:00 से 8:30 बजे तक विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम हवन यज्ञ के माध्यम से विक्रमी नव संवत् के विशेष मन्त्रों के द्वारा आहुतियां डाली गई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

- रवि वासुदेवा
मन्त्री आर्य समाज

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्सः 23360150, 23365959 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादकः धर्मपाल आर्य सह सम्पादकः विनय आर्य व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह